Roll No. : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

APF–2002

M.A. (Final) Examination, 2022

HINDI

Paper - II

(आधुनिक काव्य)

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **100***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

1. सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द) :

   (i) 'साकेत' के नामकरण की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

   (ii) 'मैथिलीशरण गुप्त ने उपेक्षिता नारियों की संवेदना को अपने काव्य में अभिव्यक्ति दी है।' सिद्ध कीजिए।

(iii) कामायनी महाकाव्य के नामकरण का औचित्य सिद्ध कीजिए।

(iv) 'कामायनी' में व्याप्त दर्शन को स्पष्ट कीजिए।

(v) 'राम की शक्ति पूजा' काव्य की प्रबन्धात्मकता बताइए।

(vi) विनोद शुक्ल कृत कविता 'दूर से अपना घर देखना चाहिए' की मूल संवेदना व्यक्त कीजिए।

(vii) शमशेर बहादुर सिंह कृत 'एक मौन' कविता का प्रतिपाद्य विषय अपने शब्दों में लिखिए।

(viii) कवि राजेश जोशी के काव्य में व्याप्त विचार तत्त्व पर प्रकाश डालिए।

(ix) 'कनुप्रिया' काव्य के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि जीवन की सार्थकता किसमें है ?

(x) 'कनुप्रिया' की दृष्टि से कृष्ण का चरित्र-चित्रण कीजिए।

खण्ड–ब

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** की व्याख्या कीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द) :

2. वेदने, तू भी भली बनी!

पाई मैंने आज तुझी में अपनी चाह घनी।

नई किरण छोड़ी है तूने, तू वह हीर-कनी,

सजग रहूँ मैं, साल हृदय में, ओ प्रिय-विशिख-अनी!

ठंडी होगी देह न मेरी, रहे दृगम्बु, सनी,

तू ही उसे उष्ण रक्खेगी मेरी तपन मनी!

आ, अभाव की एक आत्मजे, और अदृष्टि-जनी!

तेरी ही छाती है सचमुच उपमोचितस्तनी!

3. कौनसा दिखाऊँ दृश्य वन का बता मैं आज ?

हो रही है आलि, मुझे चित्र-रचना की चाह–

नाला पड़ा पथ में, किनारे जेठ-जीजी खड़े,

अम्बु अवगाह आर्यपुत्र ले रहे हैं थाह ?

किंबा वे खड़ी हों घूम प्रभु के सहारे आह,

तलवे से कण्टक निकालते हों ये कराह ?

अथवा झुकाये खड़े हों ये लता और जीजी

फूल ले रही हो, प्रभु दे रहे हों, वाह वाह ?

4. कुसुम कानन-अंचल में मंद-पवन प्रेरित सौरभ साकार,

रचित-परमाणु-पराग-शरीर खड़ा हो, ले मधु का आधार।

और, पड़ती हो उस पर शुभ्र नवल मधु-राका मन की साध

हँसी का मंद विह्वल प्रतिबिम्ब मधुरिमा खेला सदृश अबाध।

5. मैं रति की प्रतिकृति लज्जा हूँ मैं शालीनता सिखाती हूँ,

लाली बन सरल कपोलों में आँखों में अंजन सी लगती,

कुञ्चित अलकों-सी घुँघराली मन की मरोर बन कर जगती,

चंचल किशोर सुन्दरता की मैं करती रहती रखवाली,

मैं वह हलकी-सी मसलन हूँ जो बनती कानों की लाली।

6. श्रेय नहीं कुछ मेरा:

मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य में—

वीणा के माध्यम से अपने को मैंने

सब कुछ को सौंप दिया था—

सुना आपने जो वह मेरा नहीं,

न वीणा का था

वह तो सब तथता थी,

महाशून्य

वह महामौन

अविभाज्य, अनाप्त, अद्रवित, अप्रमेय

जो शब्दहीन

सब में गाता है।

7. लामकाँ है भाषा

जिस में नहीं बन सकता

मकाँ कवि का

—किसी का भी—

उड़ते ही रहना है उसे

ठहरा कि लो यह गिरा

कवि इसीलिए घर नहीं

घर के बिम्ब रचता है

जिन में बसी रहती है

बस उस की बास

8. एक भयानक बेफ़िक्री है

पाठक अत्याचारों के किस्से पढ़ते हैं अखबारों में

मगर आक्रमण के शिकार को पत्र नहीं लिखते हैं

सम्पादक के द्वारा

सभी संगठित दल विपक्ष के

अविश्वास प्रस्ताव के लिए जुट लेते हैं

एक भयानक समझौता है राजनीति में

हर नेता को एक नया चेहरा देना है।

खण्ड–स

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द) :

9. मैथिलीशरण गुप्त कृत 'साकेत' (नवम् सर्ग) में व्याप्त युगबोध का वर्णन कीजिए।

10. 'कामायनी में छायावाद की समस्त प्रवृत्तियाँ विद्यमान हैं।' कथन की सत्यता प्रमाणित कीजिए।

11. मुक्तिबोध कृत 'अंधेरे में' कविता की मूल संवेदना बताते हुए काव्य की विषय-वस्तु पर लेख लिखिए।

12. धर्मवीर भारती कृत 'कनुप्रिया' काव्य के आधार पर कृष्ण और राधा का आत्मसंघर्ष स्पष्ट करते हुए राधा का चरित्र-चित्रण कीजिए।